

सिद्धार्थ गौतम, जिन्हें बुद्ध के नाम से जाना जाता है, एक आध्यात्मिक शिक्षक और बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। उनकी शिक्षाएँ, जिन्हें धर्म के नाम से जाना जाता है, का एशियाई दर्शन, धर्म और संस्कृति पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा है। यहां बुद्ध के जीवन और उनकी शिक्षाओं के प्रमुख पहलू हैं:

1. प्रारंभिक जीवन:

- सिद्धार्थ गौतम का जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व वर्तमान नेपाल के लुंबिनी में हुआ था।
- उनका जन्म एक शाही परिवार में हुआ था और उन्होंने दुनिया की पीड़ाओं और कठिनाइयों से दूर रहकर एक आश्रययुक्त जीवन व्यतीत किया।

2. चार जगहें:

- 29 साल की उम्र में, सिद्धार्थ महल से बाहर निकले और "चार स्थलों" का सामना किया, ये चार मुठभेड़ें थीं जिन्होंने उन्हें गहराई से प्रभावित किया:
 - एक बूढ़ा आदमी, उम्र बढ़ने की अनिवार्यता दिखा रहा है।
 - एक बीमार व्यक्ति, बीमारी और पीड़ा की प्रकृति को प्रकट करता है।
 - एक मृत शरीर, नश्वरता और मृत्यु को दर्शाता है।
 - एक भटकता हुआ तपस्वी, जो आध्यात्मिक सत्य की खोज का प्रतिनिधित्व करता है।

3. महान त्याग:

- अपने द्वारा देखे गए कष्ट से अभिभूत होकर, सिद्धार्थ ने अपना राजसी जीवन त्याग दिया, अपने परिवार को छोड़ दिया, और दुख का कारण और उसकी समाप्ति का मार्ग खोजने के लिए आध्यात्मिक खोज पर निकल पड़े।

4. आत्मज्ञान (निर्वाण):

- वर्षों के ध्यान और तपस्या के बाद, सिद्धार्थ को 35 वर्ष की आयु में भारत के बोधगया में बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ।
- इस ज्ञानोदय के दौरान, उन्होंने पीड़ा की प्रकृति, जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार), और मुक्ति (निर्वाण) के मार्ग के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त की।

5. चार आर्य सत्य:

- बुद्ध की शिक्षाएँ चार आर्य सत्यों में समाहित हैं, जो बौद्ध दर्शन की नींव हैं:
 1. दुख का सच (दुःखा): दुख मानव अस्तित्व में अंतर्निहित है।
 2. दुःख के कारण का सत्य (समुदाय): आसक्ति और इच्छा दुःख का कारण बनती है।
 3. दुख निरोध का सत्य (निरोध): आसक्ति और इच्छा को त्याग कर दुख को समाप्त किया जा सकता है।
 4. दुख निरोध (मग्गा) के मार्ग का सत्य: आर्य अष्टांगिक मार्ग दुख से मुक्त जीवन जीने के लिए एक मार्गदर्शक प्रदान करता है।

6. महान अष्टांगिक पथ:

- नोबल अष्टांगिक पथ में आठ सिद्धांत या प्रथाएं शामिल हैं जो व्यक्तियों को नैतिक आचरण, मानसिक अनुशासन और ज्ञान के जीवन की ओर मार्गदर्शन करती हैं। इसमें सही समझ, सही इरादा, सही भाषण, सही कार्य, सही आजीविका, सही प्रयास, सही दिमागीपन और सही एकाग्रता शामिल है।

7. मध्यम मार्ग:

- बुद्ध ने "मध्यम मार्ग" की वकालत की, जो एक संतुलित दृष्टिकोण है जो आत्म-भोग और चरम तपस्या के चरम से बचाता है। यह दृष्टिकोण बौद्ध अभ्यास का केंद्र है।

8. शिक्षाएँ और शिष्य:

- बुद्ध ने अपना शेष जीवन अपनी अंतर्दृष्टि और आत्मज्ञान का मार्ग सिखाने में बिताया।
- उन्होंने भिक्षुओं (भिक्षुओं) और ननों (भिक्षुनियों) सहित अनुयायियों के एक समूह को आकर्षित किया, जिन्होंने प्रारंभिक बौद्ध संघ (समुदाय) का गठन किया।
- बुद्ध की शिक्षाएँ मौखिक रूप से प्रसारित की गईं और अंततः त्रिपिटक (पाली कैनन) और विभिन्न अन्य बौद्ध ग्रंथों में संकलित की गईं।

9. मृत्यु और परिनिर्वाण:

- बुद्ध का 80 वर्ष की आयु में कुशीनारा (आधुनिक कुशीनगर) में निधन हो गया।
- उनकी मृत्यु को महापरिनिर्वाण कहा जाता है, जो जन्म और मृत्यु के चक्र से उनकी पूर्ण मुक्ति को दर्शाता है।

LEARNING
MANTRAS